नैतिकता एवं धर्म का उद्देश्य ही मानवाधिकार है

डॉ. मीरा दुबे
बरोडा संस्कृत महाविद्यालय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बरोडा
Email - dubey.meera-bsm@msubaroda.ac.in

शोधसार: भारतीय धर्म दर्शन में नैतिकता शुद्ध आचार, व्यहवार का शास्त्र है जो मानव के द्वारा-मानव के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों को ध्यान में रखकर किया गया आचार-व्यवहार शास्त्र है | नैतिक विचार एवं धर्म मानव को दृढ, सशक्त तथा मानवीय बनाते है | यही ज्ञान, मुक्ति और आत्म-शान्ति (संतुष्टी) का साधन है|

1. प्रस्तावना:

नैतिक-व्यवस्था सार्वभौम है और यह विश्व की श्रृंखला तथा धर्म का मूल है| नैतिकता कोई विचार या सिद्धांत नहीं है अपितु संस्कारो द्वारा पोषित,आचरण द्वारा आचरित, स्वार्थरहित और अभिमानरहित व्यवहारशास्त्र है| जहाँ मानव हित ही नहीं, पशु-पक्षी तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ध्यान कर श्रवण मनन निदिध्यासन से किया गया धारणा धर्म है | अतः नैतिकता को धर्म से पृथक करना या पृथक परिभाषित करना कठिन है| मानव ही इसका उत्पादक-उत्पादन और उपभोक्ता है एवं प्रयोगशाला भी है | अर्थात् वही कर्ता-करण-क्रिया (कर्म-संग्रह) है जिसे उस शब्द –प्रेरक ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय को समझकर सम्पादन किया जाता है |

2. नैतिकता :

ऋग्वेद में नैतिक-व्यवस्था को 'ऋत', मीमांसा में 'अपूर्व' तथा न्याय-वैशेषिक में इसे 'अदृष्ट' कहते है क्योंकि यह दृष्टिगोचर नहीं होता पर इसका प्रभाव परमाणुओं पर भी पड़ता है| वस्तुओं का उत्पादन तथा घटनाओं का उपक्रम इसी के अनुसार होता है| यही नैतिक-व्यवस्था धर्म-दर्शन में कर्मवाद कहलाता है अर्थात् कर्मो के धर्म-अधर्म सर्वथा सुरक्षित रहते है |

नैतिकता पर स्वतन्त्र रूप से यूनान में सुकरात के समय से शुरू हुआ| सुकरात मनुष्य के आचरण को कुछ सिद्धांतो पर आधारित करना चाहते थे| उनके विचार से हमें अपना निर्णय संवेदनाओ से प्रभावित होकर नहीं करना चाहिए बल्कि प्रत्येक समस्याओं का परिक्षण तर्क और विवेक के अनुसार करना चाहिए| हमें सीधे-सीधे तथ्यों को स्पष्ट रूप से सामने रखना चाहिए | सुकरात ने नीतिशास्त्र में निम्न तीन विषयो पर काम किये जो निम्नलिखित है |

१. **मानव प्रकृति के विषय में तथ्यों की खोज |**
२.**नैतिक नियमो की स्थापना |**
३. **नैतिक प्रत्ययो का विश्लेषण |**

सुकरात का विचार है कि अपने लाभ से ऊपर, जन-कल्याण और मनुष्य के निर्णय का विवेक का आधार ही नीतिशास्त्र का मूलाधार है | प्रवृति-निवृत्ति,कर्त्तव्य-अकर्तव्य,भय-अभय,तथा बंधन और मोक्ष को यथार्थ जानना तथा धारण करना धर्म है| मनुस्मृति में धर्म **"आचार: परमो धर्म:"**१/१०८ जिसे मानव स्वतः अपनी बौद्धिक ,तार्किक एवं अध्यात्मिक शक्ति से प्रयोग करता है | यहीं ही उसके व्यवहार में नैतिकता या अनैतिकता प्रदर्शित होती है, जो उसके शैक्षणिक और पारिवारिक संस्कारो से सिखाता है |नैतिकता या अनैतिकता मानव की प्रकृति पर भी उतना ही आधारित है जितना धर्म पर| अतः धर्म शब्द के यथार्थ स्वरूप को जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है |

3. धर्म / धर्म स्वरूप:

भारत की अपनी एक वैचारिक परंपरा रही है जहाँ विभिन्न विचारको ने धर्म की परिभाषा भिन्न-भिन्न दिये है | महर्षि कणाद के मत में **"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसिद्धि: स धर्म:"** अर्थात् अभ्युदय की सिद्धि जो करे वह धर्म है| यह एक वैशेषिक दर्शन का विचार है| इससे धर्म की व्यापकता,उदारता स्पष्ट है, मनु कहते है कि **"आचारो परमो धर्म:" १/१०८,** ऋग्वेद में

कहा गया है **"केवालाघो भवति केवलादि"** स्वयं(अकेला) खाने वाला पापी होता है अर्थात् वैदिक परम्पराओं से एक उदार मानवीय परिभाषाए प्राप्त होती है|पर प्रश्न उठता है कि धर्म है क्या ? धर्म शब्द का अर्थ Religion शब्द से भिन्न है| "धर्म" शब्द **ध्रियते अनेनेति धृञ्** (धारणपोषणयोः धातोः) मन् प्रत्यय से धर्म शब्द का तात्पर्य है भावना,आचार,व्यवहार तथा भ्वादिगणीय धृञ् धारणे धातु से निष्पन्न हुआ है, धर्म शब्द का मूल अर्थ है "धारण करनेवाला"| इसीलिए **धर्म के स्वरूप** को मनुस्मृति में निम्नलिखित कहागया है|

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः | धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् || ६/९२

धर्म धृति(संतोष) है, धर्म क्षमा है, धर्म दम है,धर्म अस्तेय है,धर्म शौच है, धर्म विद्या है, धर्म सत्य है, धर्म अक्रोध है| धर्म का यह भाव है ही मानव को नैतिक बनाता है | जिससे व्यक्ति कार्यो में प्रवृत होता है पर यह धर्म भी मनुष्य अपने प्रकृति के अनुसार धारण करता है| इसे स्पष्ट करने के लिए मानवीय सुख-दुःख-उदासीन भावयुक्त विषयो का अध्ययन उदहारण द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास करुगी जैसे : --- एक व्यक्ति जो तैरना की कला जानताहै वह दरिया में आनंदयुक्त सुख का अनुभव करेगा पर जो तैरना नही जानता वह दुःख,परन्तु जल में रहने वाले जीव(मछली) के लिए सामान्य भाव है | ये तीनो अवस्थाए विद्यमान है संसार में, सुख-दुःख तथा प्राकृतिक विषयो की ओर आकृष्ट होना व्यक्ति का सहज गुण है जिसे धारण कर किसी कार्य में प्रवृत्त या निवृत्त होता है और यह भाव व्यक्ति में सत्त्व-रज-तम के कारण इस संसार में व्याप्त होता है यही त्रिगुणात्मक स्वरुप ही व्यवहार द्वारा व्यक्त होता है | इन त्रिगुणात्मक युक्त मनुष्य स्व-स्व प्रकृत्यानुकूल मन-वचन-शरीर द्वारा शुभ-अशुभ कर्म में प्रवृत्त या निवृत्त होता है| |

4. मानव के स्वरूप :

धर्म और दर्शन के अनुसार मानव जिसमे सत्त्व,रज और तम ये तीनो गुण विद्यमान रहता है इन्ही तीनो गुणों से युक्त मनुष्य स्वभावतः व्यवहार करता है मनुस्मृति में लिखा है कि-----

सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम् | एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रित्तं वपुः ||१२/२६ अर्थात् सत्त्वगुण प्रधान मानव ज्ञानी, तमोगुण प्रधान अज्ञानी और रजोगुण प्रधान राग-द्वेष युक्त होता है | मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार ही कर्ता-करण-क्रिया का सम्पादन करता है | स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शरीरधारी मानव के भौतिक और आध्यात्मिक स्वरूप होते है| भौतिक पक्ष के अन्तर्गत मनुष्य के शारीरिक,जैविक तथा मनोवैज्ञानिक पक्ष आते है| स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि, मानवीय शारीर में एक ऐसा अवयव है, जो शारीरिक दृष्टि से भी मनुष्य को विशिष्ट तथा अन्य जीवो से उच्चतर बना देता है| वह अवयव है मानव "मष्तिष्क"| मानव-मष्तिष्क मनुष्य को अधिक विकसित एवं अधिक सक्षम है जो अन्य जीवो से उसे एक विशिष्ट जीव बनाता है | मनुष्य अपने प्रकृति और संस्कारो के अनुसार क्रिया करता है| यह क्रिया जब आसक्ति, स्वार्थ, और अहंकार से परे हो कर **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** इति उद्देश्य से कार्य किया जाता है तो वह मानव का आध्यात्मिक पक्ष कहलाता है यही आध्यात्मिक पक्ष मानव की शारीरिक क्षमता को बढाता है | स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में इसे आत्म-शक्ति (Soul-force)या आत्मन् कहते है

अतः मानव का जो व्यक्त रूप है वह भौतिक और जिसका हमें प्रतीति होती है वह आध्यात्मिक स्वरूप है | वास्तव में इसे स्पष्ट समझने की आवश्कता है जैसे सूर्य या चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब विभिन्न बर्तनों में रखे जल में दिखाई देता है | सभी प्रतिबिम्ब एक-दुसरे से भिन्न है , यहाँ तक कि गंदे जल में प्रतिबिम्ब भी धूमिल और स्वच्छ जल में स्वच्छ प्रतिबिम्ब दिखता है | वस्तुतः इन सब में झलकने वाला सूर्य या चन्द्रमा एक ही है |मनुष्य का उद्देश्य यही होना चाहिए इस शाश्वत सत्ता का ज्ञान प्राप्त करना | जब तक मनुष्य में ज्ञान नहीं होगा, वह दुखी ,अस्थिर,अशांत रहेगा | उसके द्वारा उत्पादन या घटना का परिणाम सर्व जन हिताय नहीं होगी और यह सब उसकी प्रकृति तथा संस्कारो पर आधारित है | यथार्थ ज्ञान द्वारा मनुष्य मुक्ति प्राप्त करता है मुक्त स्वतन्त्र मानव द्वारा ही नैतिकता संभव है | मानवाधिकार शब्द तभी चरितार्थ होगा | प्रत्येक मानव प्रत्येक दूसरे मनुष्य के स्वार्थ और स्वाभिमान का ध्यान रख के कर्ता-करण-क्रिया द्वारा अपने आध्यात्मिक पक्ष को चरितार्थ करे | जहाँ स्वतन्त्र व्यवहार न्याय युक्त हो, न्याय ही शान्ति एवं शुद्ध वातावरण का प्रसार करता है |

शुक्रनीति के अनुसार राम के सादृश्य कोई भी नीतिमान नहीं हुआ जिनकी न केवल मानवों पर अपितु वानर और भालुओं ने भी उनकी सुभृत्यता स्वीकार की थी | नीति –लोकतंत्रात्मक शासन की यही विशेषता होती है कि शासन की सम्पूर्ण गतिविधि जनसमूह की इच्छा का अनुसरण करे | राम अपने स्वार्थ वश शासन में जनसामान्य की इच्छा को नहीं ठुकराए| राम-राज्य की विशेषता है कि उन्होंने नीति,प्रीति,परमार्थ तथा स्वार्थ के रहस्यज्ञ को चरित्रार्थ किये | प्रजारञ्जन

नीति, सीता के प्रति प्रीति, पुत्रो की योग्य शिक्षा तथा संस्कार स्वार्थ और दोनों पति-पत्नी का अध्यात्मनिष्ठ सम्पादन परमार्थ का साधन है|

5. निष्कर्ष:

अतः शुद्ध नीति और शुद्ध धर्म ही मानवाधिकार का आधार है| ज्ञान की शक्ति, धर्म की प्रवृत्ति-निवृत्ति मनुष्य को दृढ बनाती है | जो अज्ञानी है वह कमजोर मनुष्य क्रोध,ईर्ष्या और घृणा से युक्त हो जाता है | इसका प्रभाव मानवाधिकार पर पड़ता तथा मत्या राज्य का अधिकार हो जाता है | मानवाधिकार का जो उद्देश्य है वह स्वतंत्रता,न्याय और शान्ति, ये नैतिकता एवं धर्म में ही सुरक्षित होते है | अतः यथार्थज्ञान होने पर ही सम्भव है और ज्ञान धर्म एवं नैतिकता के द्वारा ही सम्भव है | इसी लिए मनुस्मृति में लिखा है कि-------

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः|एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ||२/१२ अर्थात् वेद,स्मृति तथा मुनियों के सदाचार और जो विचार स्वयं को संतुष्ट करे | यही चार धर्म के लक्षण है| वैदिक परम्परा की यह विशेषता है कि शास्त्रों को जानकर ऋषि मुनियों के आचरण को देखकर राग-द्वेष रहित होकर निर्णय अपने विवेक से करना चाहिए जो स्वयं के आत्मा को संतुष्ट करे |

धर्म एवं नैतिकता शुद्ध ज्ञान है जिसे मानव गर्भ से ही धारण करता है| जब वह आसक्तियों अहंकार और स्वार्थ से स्वतन्त्र(परे) हो कर शुद्ध विवेक के द्वारा आत्मन् वैचारिक क्रिया ही मानवाधिकार के उद्देश्य को पूर्ण करती है | यहाँ नैतिक, नीति, ऋग्वेद मे 'ऋत', मीमांसा में 'अपूर्व', न्याय-वैशेषिक में इसे 'अदृष्ट' तथा Ethicsकहा गया है| क्या ये सभी शब्द सामान अर्थ को व्यक्त कर रहे है ? इन सभी की सही व्याख्या और विश्लेषण ही मानवाधिकार शब्द की व्याख्या कर देगा क्योकि ये मानव मात्र के लिए ही है | समस्या है सही प्रस्तुतिकरण की | समकालीन समय में हो रही समस्याओं का विवेचन करने की आवश्यकता है | अतःवैदिक एवं पाश्चात्य सन्दर्भ में निम्नलिखित विषयो पर शोध करने की आवश्यकता है –

शोध विषय:

१. नैतिकता एवं धर्म का अर्थ: Meaning of ethics.
२. धर्म-अधर्म एवं नैतिक-अनैतिकMoral-Non Moral Values.
३. नैतिक बाध्यता Moral Oblegation.
४. नैतिक निर्णय.
५.मानवाधिकार का अर्थ एवं उद्देश्य.
६.नैतिकता एवं धर्म का उद्देश्य ही मानवाधिकार है |

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१. वसन्तकुमार लाल , 'समकालीन भारतीय दर्शन', प्रकाशक –मोतीलाल बनारसीदास
२. मनुस्मृति, कुल्लुकभट्टकृत "मन्वर्थमुक्तावली" पं.गोपालशास्त्रीनेने संपादक, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
३. प्रो. राधेश्यामधर द्विवेदी , 'मानवनीति विवेचनम्' संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय , वाराणसी
४. केदारनाथ रामनाथ, 'पाश्चात्य नीतिशास्त्र'.